मृच्छकटिकम्

Name :- Soni Kumari
class :- B.A II year
Deptt — Sanskrit

तृतीय अंक की कथावस्तु

मृच्छकटिकम्' के तृतीय अंक का नाम 'सन्धिच्छेद' है। सन्धिच्छेद का अर्थ होता है सेंध लगाना अर्थात चोरी करना। इस अंक में शर्विलक चारुदत्त के घर में सेंध लगाकर चोरी करता है इसलिए इसका नाम 'सन्धिच्छेद' नाम पड़ा।

शर्विलक अपनी प्रेमिका तथा वसन्तसेना की दासी 'मदनिका' को दासता से मुक्ति दिलाने के लिए चारुदत्त के घर में सेंध लगाकर वसन्तसेना के रखे हुए आभूषणों को चुराकर ले जाता है। चारुदत्त की पत्नी 'धूता' अपने पति को लोकापवाद से बचाने हेतु उन आभूषणों के बदले 'रत्नमाला' देती है जिसे लेकर विदूषक वसन्तसेना को दे देता है।

तृतीय अंक के प्रथम दृश्य में चारुदत्त का चेट मंच पर आता है। मध्यरात्रि का समय है। चारुदत्त घर नहीं लौटे हैं। अतः चेट चिन्ता व्यक्त करता है।

द्वितीय दृश्य में चारुदत्त और मैत्रेय रेभिल के घर से संगीत सुनकर लौटते हैं। संगीत की प्रशंसा करते हैं और सो जाते हैं।

तृतीय दृश्य में शर्विलक वसन्तसेना की दासी मदनिका को गुलामी से छुड़ाने के लिए चारुदत्त के घर में सेंध लगाता और चोरी करने जाता है जहाँ विदूषक वसन्तसेना का आभूषण हाथ में लिए हुए सोया हुआ है और नींद में वह बड़बड़ा रहा है। वह ~~नींद~~ नींद में शर्विलक को चारुदत्त समझकर कहता है कि यह आभूषण आप ही ~~रखिए~~ रख लें क्योंकि यह मुझसे नहीं संभलेगा। शर्विलक इस मौके का फायदा उठाकर गहने लेकर भाग जाता है।

चतुर्थ दृश्य में रदनिका और मन्नाती है। चारुदत्त और विदूषक जागते हैं। विदूषक की मूर्खता से स्वर्णाभूषण चोरी हो गई है, फिर भी चारुदत्त कुछ नहीं बोलता है। चारुदत्त की पतिव्रता भार्या धूता निज पति को कलंक से बचाने के लिए अपना एकमात्र बहुमूल्य रत्नहार भेजती है और उसे लेकर विदूषक वसन्तसेना के घर प्रस्थान करता है।

तृतीय अंक समाप्त